'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 | अंक 7 | 19 जून, 2017 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

क्षत्रियों की धर्मभीरूता से पनपी विकृतियां : स्वामीजी

एक मात्र परमात्मा का स्मरण, ईश्वरीय आदेश का पालन एवं परमात्म पथ का पालन धर्म है। धर्म नवीन उत्साह, एकता, स्वास्थ्य, परम धाम, संतोष व शक्ति देता है। इसका पालन संतों की सेवा, सद्गुरु की आज्ञा का पालन एवं एक परमात्मा में श्रद्धा से संभव है। लेकिन धर्म भीरू क्षत्रियों को धर्म की गलत परिभाषा समझा कर उनकी धर्मभीरुता के बल पर धर्म की मनमानी व्याख्या कर धर्म के नाम पर विकृतियां फैलाई गई, भ्रम फैलाए गए और उसी का परिणाम है कि तथाकथित स्मृतियों के अनुसार आधी से ज्यादा आबादी को अभागा एवं नीच घोषित कर दिया गया। यह पढ़ाया गया कि ब्राह्मण की आज्ञा का पालन न करने वाला क्षत्रिय रौरव नरक में जाता है और ऐसे ही भ्रमों से ग्रसित क्षत्रियों के बल का सहारा लेकर सामाजिक व्यवस्थाओं को धर्म के नाम पर प्रतिष्ठित कर दिया गया। 30 मई को संघशक्ति कार्यालय में आयोजित सत्संग में प्रवचन करते हुए स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि विगत दो ढाई हजार वर्षों में जिस किसी महापुरुष ने भी सत्य बताया उसे सनातन धर्म से अलग कर दिया गया। बुद्ध के अनुयायियों को बोद्ध कहा गया। महावीर के अनुयायियों को जैन बता दिया, दयानंद सरस्वती ने सत्य बताया तो उनको भी आर्य समाजी बताकर अलग कर दिया गया। नानक, कबीर आदि ने सत्य बताया था उन्हें नास्तिक घोषित कर दिया। इस प्रकार विकृतियों को ही धर्म घोषित करने का परिणाम हुआ कि आपके ही भाई बंधु आपसे अलग होते गए। आज जब वह व्यवस्था नहीं रही तब उस तथाकथित धर्म के कारण विघटन पैदा हुआ जबकि धर्म जोड़ने वाला कारक है। एकता पैदा करता है। धर्म अपरिवर्तनशील होता है। एक बार जो इस पथ पर कदम रख देता है उसके कल्याण का बीमा हो जाता है। धर्म चित्त का निरोध और विलय करा देता है। धर्म अमृत होता है जिसका स्वल्प अभ्यास भी जन्म-मृत्यु से पार लगाने वाला होता है। उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं से कहा कि क्षत्रियों ने तलवार के बल पर धर्म पर होने वाले बाह्य आक्रमणों को अचिन्त्य बलिदान देकर निष्फल किया लेकिन व्यवस्था के अन्दर पनपी विकृतियों एवं भ्रमों के घुन को नहीं मिटा पाए और उसका परिणाम हुआ कि व्यवस्थाएं अन्दर से खोखली हों गई। धर्म के नाम पर शोषण प्रारम्भ हो गया। उन्होंने उपस्थित लोगों का आह्वान करते हुए कहा कि क्षत्रिय जैसे पहले तलवार से लड़ते थे उसी प्रकार आज विचारों से लड़ें। आज का जमाना विचार का जमाना है। तलवार का स्थान शास्त्र को देवें और सौभाग्य से आज आपके पास शास्त्र की यथार्थ व्याख्या उपलब्ध है।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

चित्तौड़ में ग्रीष्मकालीन बालिका शिविर का समापन

विस्तृत समाचार पृष्ठ 8 पर

मुख्यमंत्री के बुलावे पर मिलने पहुंचे संघ प्रमुख श्री

15 जून को प्रदेश की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने अपना प्रतिनिधि भेजकर माननीय संघ प्रमुख श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर से मिलने की ईच्छा प्रकट की। संघ प्रमुख श्री व वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी मुख्यमंत्री आवास पर मिलने पहुंचे जहां लगभग डेढ घंटे तक प्रदेश की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों पर चर्चा की।

'इदं मम' भाव के साथ काम करें : संघ प्रमुख श्री

संघ समाज की आवश्यकता है। समाज में संघ कार्य बढ़े, विस्तार पाए यह भी समाज की आवश्यकता है लेकिन सम्पूर्ण समाज इस बात को नहीं समझता परन्तु जो इस बात को समझता है उसे इस काम को इस भाव के साथ काम करना पड़ेगा कि यह काम मेरा है, इसे ही इदं मम भाव कहा जा सकता है। जिम्मेदारी उसी की है जो उस जिम्मेदारी को समझता है और आप सभी लोग इस जिम्मेदारी को समझते हैं इसीलिए संघ ने आपको दायित्व सौंपा है। आवश्यकता है कि आप भगवान से प्रार्थना करें कि वह आपको इतनी शक्ति देवे कि आप वर्ष भर अपने दायित्व का भली प्रकार निर्वहन कर सकें। भगवान से की गई यह प्रार्थना हमारे संकल्प को मजबूती प्रदान करेगी और आपको अपने दायित्व पालन की शक्ति मिलेगी।

बाड़मेर स्थित भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम में आयोजित दो दिवसीय कार्ययोजना शिविर में उपस्थित प्रांत प्रमुखों, सह प्रांत प्रमुखों, संभाग प्रमुखों, केन्द्रीय विभाग प्रमुखों एवं केन्द्रीय कार्यकारियों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि संघ में मिलने वाले दायित्व कोई पद नहीं बल्कि जिम्मेदारी है और अपने आपको जिम्मेदार समझने वाले प्रत्येक स्वयंसेवक को कोई न कोई दायित्व लेना चाहिए।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

हमारे गांव हमारी जड़

राजपूत की पहचान उसके गांव से होती है। आजकल व्यवसाय, शिक्षा आदि आवश्यकताओं के कारण गांव छोड़कर शहरों में रहने वाले राजपूत परिवारों की नई पीढ़ी अपनी इस पहचान से अनभिज्ञ होती जा रही है। गांवों से कटना एक प्रकार से अपनी जड़ों से कटना है क्यों कि हमारी वंश वृक्ष की जड़ों की ओर जाने पर हमें ज्ञात होता है कि हमारे ही किसी पूर्वज ने उस गांव का रक्षण, पोषण किया है जिसे हम अपना गांव कहते हैं। ऐसे में हमारी जड़ों के प्रतीक उस गांव को जान सकें इसके लिए पथ प्रेरक के 20वें वर्ष के प्रवेश के साथ ही एक नया स्तंभ शुरू गया है - **'हमारे गांव-हमारी जड़।'** इसमें श्रृंखलाबद्ध रूप से प्रति अंक एक गांव का परिचय छापा जा रहा है। इस बार प्रस्तुत है जैसलमेर जिले में स्थित बाडोड़ा गांव की कहानी।

बिहारीदासोत भाटियों का गांव : बडोड़ा गांव

गांव में स्थित तालाब

जैसलमेर के महारावल मालदेव जी (1550-1561 ई.) के कुंवर राजश्री खेतसिंह के पौत्र व राजश्री दयालदास के पुत्र राजश्री बिराहीदास भाटी को बडोड़ा गांव का ठिकाणा प्राप्त हुआ था। उनकी अष्ट खम्भों की भव्य छतरी बड़ा बाग की विश्व प्रसिद्ध छतरियों के बीच स्थित है। जैसलमेर से 33 किलोमीटर पूर्व में स्थित बडोड़ा गांव ग्राम पंचायत मुख्यालय है। इस गांव के पूर्वी क्षेत्र में राजस्व गांव जसकर्णपुरा व पश्चिम में अभयनगर है। पंचायत समिति, तहसील, थाना, वाया व विधानसभा क्षेत्र आदि सभी जैसलमेर है। महारावल मूलराज जी द्वितीय (सन् 1761-1819 ई.) के समय दीवान स्वरूप सिंह मोहता, (टावरी माहेश्वरी) का प्रभाव बहुत बढ़ गया था। वह न राजघराने का हितैषी था न ही भाटी सामन्तों का। सन् 1783 में मकर संक्रांति के दिन महाराज कुंवर रायसिंह जी ने भरे दरबार में मोहता स्वरूप सिंह को तलवार से मौत के घाट उतार दिया।

बडोड़ागांव के बिहारीदासोतों व रियासत के अन्य सरदारों ने श्री दरबार को राजगद्दी से उतार दिया तथा उन्हें छवि निवास में कैद कर दिया। युवराज रायसिंह जी को राजगद्दी पर बिठा दिया। बिहारीदासोत सरदारों द्वारा उठाया गया यह कदम उनकी राजनीतिक हैसियत व प्रशासनिक सूझ-बूझ को प्रतिबिम्बित करता है। महारावल मूलराजजी ने पुनः राज गद्दी पर बैठने के बाद उसी मोहता के पुत्र सालमसिंह को दीवान बना दिया जिसने बाद में अनेक काले अध्याय लिख डाले। मूलराज जी ने उक्त घटनाक्रम के लिए बिहारीदासोतों को दोषी ठहराया व प्रतिशोध लेने हेतु हाथीसिंह सोढ़ा के नेतृत्व में एक सेना भेज दी। बडोड़ा गांव के सरदारों ने कड़ा मुकाबला किया। इस लड़ाई में अजबसिंह जी रुपचन्दोत व बन्नेसिंह जी केशुदासोत काम आए तथा अन्य पलायन कर गए। बाद में गांव थोरी माली भाखरी के पास पुनः बसाया गया। भाखरी के ऊपर एक गढ़ी का निर्माण करवाया गया जिसमें बुर्जियां बनी थीं। महारावल गजसिंह जी (सन् 1819-1846 ई.) के समय सन् 1828 ई. में राजसिंह जी आदि बिहारीदासोत भाटी बीकानेर की साढ़े चार सौ ऊंटनियां ले आए। बीकानेर के महाराज रतनसिंह ने फौज भेजी। बासणपीर गांव के पास युद्ध हुआ। बीकानेर की फौज तोपें छोड़ कर भाग गई। नगाड़ों की जोड़ियां, छड़ी व फौज का लवाजमा आदि सब छीन लिए गए।

गांव के पश्चिम में बना विशाल बिहारीसर तालाब शीतल जल द्वारा पीढ़ियों से ग्रामीणों की प्यास बुझाता रहा है। गांव में दईसर व माताजी की ओरण में गोगासर दोनों कुएं आज भी मौजूद हैं। गांव में माताजी का चंवरा, आईनाथ जी का मंदिर, श्रीकृष्ण मंदिर, शिव मंदिर, हनुमान मंदिर व दक्षिण में गादेसर पहाड़ी पर भूरेबाबा का मंदिर आदि बने हुए हैं। गांव की सीमा से पश्चिम में राजश्री दयालदास जी की अष्ट खम्भों की भव्य छतरी बनी हुई है। गांव की जनसंख्या 3400 है। इसमें अधिकतर बिहारीदासोत भाटी राजपूत हैं। इनके अलावा सोलंकी राजपूत, हजूरी, मेघवाल, सुथार, नाई, मंगणयार व मुसलमान आदि निवास करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में बडोड़ा गांव सम्पूर्ण जिले में हमेशा से ही अग्रणी रहा है। नौकरी, व्यवसाय व राजनीति में भी यहां के निवासी जिले भर में अपनी पहचान रखते हैं। यहां के लोग प्रत्येक विभाग में कार्यरत हैं। विशेषकर सेना, पुलिस व शिक्षा विभाग में भारी संख्या में मौजूद हैं। रक्षा सेवा में यहां के सरदारों को अच्छी रैंक तथा वीरता व सेवा मेडल प्राप्त हैं। हवलदार कानसिंहजी सोलंकी को सन् 1982 में मरणोपरांत शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया। लेफ्टिनेंट कल्याणसिंह जी को इण्डियन ऑर्डर ऑफ मेरिट पुरस्कार प्राप्त हुआ। जिले के प्रथम आर.ए.एस. दानसिंह जी भी इसी गांव के थे। वकील साहब भोपालसिंह जी जैसलमेर के 1972 से 1977 तक विधायक रहे व लम्बे समय तक जिला प्रमुख पद पर रहे। संत मेहराजसिंह जी साध बावजी की आज भी बड़ी मान्यता है। शहीद उम्मेदसिंह जी लंका के ऑपरेशन पवन के दौरान सन् 1989 में शहादत को प्राप्त हो गए थे, उनका भव्य स्मारक गांव में जैसलमेर रोड पर बना हुआ है। डिप्टी कमाण्डेन्ट अर्जुनसिंह जी को 23 सेना मेडल प्राप्त हुए, उनका स्मारक अर्जुन सर्किल पर बना हुआ है। सामाजिक कार्यक्रमों जैसे रैली व जयन्तियों आदि में यहां के युवा व बुजुर्ग सभी समान रूप से भागीदार होते हैं। सन् 1992 में श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर तथा सन् 2010 में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर इस गांव में सम्पन्न हो चुके हैं। गांव में प्रेमसिंह, हुकमसिंह, प्रतापसिंह, उम्मेदसिंह, रतनसिंह आदि सक्रिय रूप में संघ से जुड़े रहे हैं। एक बार माननीय संघ प्रमुख श्री भी गांव में पधार चुके हैं।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

राजस्थान विश्वविद्यालय व बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर : 1844 में जयपुर के महाराजा सवाईराम सिंह ने महाराजा स्कूल की स्थापना की जो आगे चलकर महाराजा कॉलेज कहलाया। महाराजा सवाई मानसिंह के समय में 1927 को महाराजा कॉलेज वर्तमान वाले नवीन भवन में स्थानांतरित हुआ। सह शिक्षा वाले इस कॉलेज के सामने महाराजा मानसिंह ने कन्या शिक्षा के लिए 1944 में महारानी कॉलेज बनाया। आजादी के पूर्व राजस्थान में प्रथक-प्रथक रियासतें थीं। इनमें जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा एवं केन्द्राधीन अजमेर में ही कॉलेज शिक्षा उपलब्ध थी। यह सभी कॉलेज तब के आगरा विश्वविद्यालय से संबद्ध थे। उन दिनों भारत में कुल 21 विश्वविद्यालय ही थे। महाराजा मानसिंह जी की परिकल्पना थी कि जयपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए। 1929 में इसके लिए हारटोग समिति बनाई गई। तात्कालीन जयपुर रियासत के प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल (जिनके नाम पर जयपुर का प्रसिद्ध सड़क एम.आई. रोड है) को महाराजा जयपुर ने विश्वविद्यालय का सपना साकार करने का काम सौंपा एवं इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मिस्टर जे.सी. रोलो को विशिष्ट शिक्षा अधिकारी नियुक्त किया गया। अन्ततः जुलाई 1947 में राजपूताना विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। उसका कार्यालय कानोता के ठाकुर साहब की हवेली केशरगढ़ में रखा गया। राजस्थान के समस्त महाविद्यालय इसके अन्तर्गत आ गए। महाराजा मानसिंह जी ने जहां वर्तमान में विश्वविद्यालय अवस्थित है वह समस्त जमीन निःशुल्क उपलब्ध कराई। आजादी के बाद राजपूताना विश्वविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। यह राजस्थान का पहला एवं प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय : इसे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भी कहा जाता है। प्रसिद्ध वकील राष्ट्रवादी विचारक कांग्रेस के नेता महामना प. मदन मोहन मालवीय की परिकल्पना है यह शिक्षा मंदिर। अविभाजित भारत में राष्ट्रवादी आधुनिक शिक्षा देने के लिए पंडित जी भारत भर की रियासतों के राजाओं से चन्दा इकट्ठा कर लाए और इस विश्वविद्यालय की परिकल्पना को साकार किया। काशी के नरेश महाराजा प्रभुनारायण सिंह ने इस विश्वविद्यालय के लिए बहुत बड़ी जमीन दी। दरभंगा (बिहार) के महाराजा रामेश्वर सिंह ने पंडित जी के प्रयासों को साकार करने में पूरा सहयोग दिया। बसन्त पंचमी 4 फरवरी 1916 को भारत के वायसराय लॉर्ड हार्डिंग ने विश्वविद्यालय की नींव रखी। इस विश्वविद्यालय को बनाने में बड़ा सहयोग भारत के तात्कालीन रजवाड़ों के राजाओं का रहा। महाराजा गंगासिंह बीकानेर इसमें बड़े सहभागी रहे। कश्मीर महाराजा हरीसिंह एवं उनके पुत्र महाराजा डॉ. कर्णसिंह का खूब सहयोग मिला। बड़ोदा के महाराजा शियाजी राव गायकवाड़ का बनाया पुस्तकालय नायाब ग्रंथागार है। मैसूर (कर्नाटक) के महाराजा कृष्णराय वाडियार (चतुर्थ) इस विश्वविद्यालय के पहले चांसलर बने। विश्वविद्यालय का भव्य प्रवेश द्वार बलरामपुर (यूपी) के महाराजा द्वारा बनाया गया। विश्वविद्यालय के मध्य भव्य काशी विश्वनाथ का मंदिर बनाया गया है। यह एशिया की सबसे बड़ी रेजिडेंसियल युनिवर्सिटी है। 35000 से ज्यादा विद्यार्थी विभिन्न संकायों में अध्ययन एवं शोध करते हैं। मुख्य केम्पस 5.5 किमी एवं दक्षिणी केम्पस 11 किमी में फैला है। यह विश्वविद्यालय राष्ट्र गौरव एवं शिक्षा का उत्कृष्ट मंदिर है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ, उत्तरदायित्व विभाजन सत्र 2017-18

माननीय संघप्रमुख श्री के निर्देशानुसार सत्र 2017-2018 के लिए निम्नानुसार उत्तरदायित्व विभाजन किया गया है :

संचालन प्रमुख	लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास	98281-30001
	केन्द्रीय कार्यकारी	
श्री गजेन्द्रसिंह आऊ	99826-11005	
श्री प्रेमसिंह रणधा	94147-01479	
श्री रेवन्तसिंह पाटोदा	86969-36935	
श्री विक्रमसिंह इन्द्रोई	80034-44444	
श्री महेन्द्र सिंह पांची	98255-84755	
श्री रामसिंह माडपुरा	94131-84223	
श्री प्रकाश सिंह भुरटिया	94132-92623	

केन्द्रीय कार्यालय एवं प्रभारी

समन्वय, संस्थाएं, राजनीति व सरकारी विभाग	श्री महावीरसिंह सरवड़ी	98281-05994
शिविर कार्यालय	श्री राजेन्द्रसिंह बोबासर	99838-44403
शाखा कार्यालय	श्री महेन्द्रसिंह गुजरावास (राजस्थान)	94130-59211
	श्री छनुभा पच्छेगांव (गुजरात)	98244-52947
संस्थान कार्यालय	श्री शंकरसिंह महरोली	94607-75557
संयोमा	श्री कृष्णसिंह राणीगांव	94144-20009
संघशक्ति-पथप्रेरक सदस्यता	श्री खीवसिंह सुल्ताना	94601-00194
लेखा	श्री गंगासिंह साजियाली	94143-96375
समाचार पत्र	श्री रेवन्तसिंह पाटोदा	86969-36935
महिला प्रकोष्ठ	श्री जोरावरसिंह भादला (राजस्थान)	99824-08873
	श्री अजीतसिंह धोलेरा (गुजरात)	98980-22951
वेबसाइट व सोशल मीडिया	श्री अभयसिंह रोड़ला	70428-79890
	श्री हर्षवर्धन सिंह रेडा	97821-04682

संभाग प्रमुख एवं प्रान्त प्रमुख

	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री गजेन्द्रसिंह आऊ**	
संभाग प्रमुख	**श्री विक्रमसिंह सिंघाणा**		76650-19192
प्रांत	जयपुर शहर	श्री सुधीरसिंह ठाकरियावास	98281-30002
	जयपुर ग्रामीण (उत्तर पूर्व)	श्री देवेन्द्रसिंह बड़वाली	92143-10288
	जयपुर ग्रामीण (दक्षिण पश्चिम)	श्री रामसिंह अकदड़ा	94615-85348
	दौसा (भरतपुर, धौलपुर)	श्री मदनसिंह बामण्या	94147-88158
	अलवर	श्री गजराज सिंह पीपली	94134-45559
संभाग प्रमुख	**श्री गौरीशंकर दीपपुरा**		97832-95244
प्रांत	शेखावाटी	श्री जुगराजसिंह जुलियासर	98288-34449
संभाग प्रमुख	**श्री शिम्भुसिंह आसरवा**		99821-36763
प्रांत	नागौर	श्री उगमसिंह आशापुरा	99503-52565
	कुचामन	श्री नत्थुसिंह छापड़ा	97720-97087
	लाडनूं, सुजानगढ़	श्री विक्रमसिंह ढींगसरी	96728-77549
संभाग प्रमुख	**श्री गुलाबसिंह आशापुरा**		99823-10968
प्रान्त	बीकानेर शहर	श्री रेंवतसिंह जाखासर	94130-13884
	नोखा-कोलायत	श्री करणीसिंह भेलू	99285-14502
	डूंगरगढ़	श्री भागीरथसिंह सेरुणा	80032-93524
	चूरू	श्री राजेन्द्रसिंह आलसर	94145-82311
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री प्रकाशसिंह भुरटिया**	
संभाग प्रमुख	श्री देवीसिंह माडपुरा		70233-01275
प्रांत	बाड़मेर शहर	श्री महीपालसिंह चूली	94132-92849
	शिव	श्री राजेन्द्रसिंह भिंयाड़-2	94146-55723
	गडरा	श्री समुद्रसिंह हरसाणी	98280-29799
	चौहटन	श्री उदयसिंह देदूसर	99285-04141
	बायतु	श्री मूलसिंह चांदेसरा	94149-00405
	गुडामालानी	श्री गणपतसिंह बूठ	90575-98339
संभाग प्रमुख	**श्री मूलसिंह काठाड़ी**		94146-33980
	बालोतरा	श्री राणसिंह टापरा	94143-84408
	सिवाना	श्री भैरूसिंह पादरू	94141-89665
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री रामसिंह माडपुरा**	
संभाग प्रमुख	**श्री गोपालसिंह रणधा**	-	77424-99083
प्रान्त	जैसलमेर शहर	श्री नरेन्द्रसिंह तेजमालता	94146-56448
	चांधन	श्री तारेन्द्रसिंह झिंझनियाली	99289-74111
	म्याजलार-झिंझनियाली	श्री हरीसिंह बेरसियाला	75686-81821
	रामगढ़-मोहनगढ़	श्री पदमसिंह रामगढ़	90010-71485
संभाग प्रमुख	**श्री सांवलसिंह सनावड़ा**		97844-71764
प्रान्त	पोकरण	श्री अमरसिंह रामदेवरा	70735-08070
	फलोदी-नाचना	श्री गणपतसिंह अवाय	94141-49797
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री प्रेमसिंह रणधा**	
संभाग प्रमुख	**श्री महेन्द्रसिंह गुजरावास**		94130-59211
प्रान्त	जोधपुर शहर	श्री उम्मेदसिंह सेतरावा	93529-05379
	शेरगढ़-बालेसर	श्री चन्द्रवीरसिंह भाळू	99501-88901
	ओसियां-बापिणी	श्री प्रेमसिंह पांचला	90019-33354
	भोपालगढ़-बिलाड़ा,	श्री भरतपालसिंह दासपां	94145-60797
संभाग प्रमुख	**श्री अर्जुनसिंह देलदरी**	-	98284-56333
प्रान्त	पाली	श्री महोब्बतसिंह धींगाणा	97725-89809
	गोड़वाड़	श्री हीरसिंह लोड़ता	98291-12991
	आहोर-जालोर	श्री गणपतसिंह भंवराणी	98281-36005
	सायला-भीनमाल,	श्री नाहरसिंह जाखड़ी	94145-65289
	सांचौर-रानीवाड़ा	श्री शक्तिसिंह आशापुरा	98290-52037
	सिरोही	श्री सुमेरसिंह उथमण	94602-62224
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री विक्रमसिंह इन्द्रोई**	
संभाग प्रमुख	**श्री भंवरसिंह बेमला**	-	94138-13601
प्रान्त	उदयपुर शहर	श्री सुरेन्द्रसिंह रोलसाहबसर	85600-23447
	उदयपुर ग्रामीण	श्री भगतसिंह बेमला	97845-40771
	राजसमन्द	श्री फतेहसिंह भटवाड़ा	99280-46575
	वागड़	श्री हनवन्तसिंह एसएसगडा	99835-65520
संभाग प्रमुख	**श्री गंगासिंह साजियाली**	-	94143-96375
प्रान्त	अजमेर शहर	श्री शिवदयाल सिंह खुड़ी	94140-05449
	अजमेर ग्रामीण	श्री विजयराजसिंह जालिया	96022-46116
	भीलवाड़ा	श्री बृजराजसिंह खारड़ा	94142-11465
	चित्तौड़गढ़	श्री जीवनसिंह नरधारी	94139-78303
	मालवा	श्री गोपालशरण सिंह सहाड़ा	94136-41017
	केन्द्रीय कार्यकारी	**महेन्द्रसिंह पांची**	
संभाग प्रमुख	श्री धर्मेन्द्रसिंह आमली		99249-94465
प्रान्त	भाव नगर शहर	श्री भागीरथसिंह सांडखाखरा	94285-22316
	धन्धुका	श्री जयपालसिंह धोलेरा	93289-55455
	मोरचन्द	श्री अर्जुनसिंह मोरचंद	89807-08137
	नारी क्षेत्र	श्री मंगलसिंह धोलेरा	94265-47936
	झालावाड़	श्री भूरूभा मोढवाणा	99253-00400
	कच्छ	श्री तनसिंह बिजावा	94280-83117
संभाग प्रमुख	**श्री दीवानसिंह काणेटी**		96383-58777
प्रान्त	अहमदाबाद-गांधीनगर	श्री जगतसिंह वलासना	99987-38410
	अहमदाबाद ग्रामीण	श्री दीवानसिंह काणेटी	96383-58777
	मेहसाणा	श्री विक्रमसिंह कमाणा	94292-23910
	बनासकांठा	श्री डूंगरसिंह चारड़ा	97275-51651
	अन्य प्रदेश		
संभाग प्रमुख	**श्री अजीतसिंह धोलेरा**		98980-22951
	श्री दयालसिंह किशोरपुरा	(सहयोगी)	98285-74503
प्रान्त	मुम्बई	श्री नीरसिंह सिंघाना	92233-41965
	पुणे	श्री रणजीतसिंह चौक	99232-30825
	सूरत	श्री खेतसिंह चान्देसरा	99744-93721
	शेष दक्षिण भारत	श्री पवनसिंह बिखरण्या	98811-32045
संभाग प्रमुख	**श्री दीपसिंह बैण्यांकाबास**		99830-78181
	श्री जितेन्द्रसिंह देवली	(सहयोगी)	98291-11386
प्रान्त	उत्तरप्रदेश	श्री जितेन्द्रसिंह सिसरवादा	77260-00111
	दिल्ली	श्री रेवतसिंह धीरा	96502-50458

संपादकीय

मतभेद और मनभेद

पश्चिम में विगत सदियों में हुई वैज्ञानिक प्रगति ने भारत को पश्चिम की तरफ आकृष्ट किया और इसकी परिणति स्वरूप भारत ने हर क्षेत्र में पश्चिम द्वारा स्थापित आदर्शों की तरफ देखना शुरू किया। भारत जीवन के स्थापित सत्यों के रूप में सदियों से प्राप्त अनुभवों को ठुकराकर पश्चिम द्वारा दी गई अवधारणाओं की तरफ आकृष्ट हुआ और ऐसी ही एक अवधारणा है मतभेद और मनभेद। अपने आपको समझदार मानने वाले लोगों द्वारा प्रायः यह कहा जाता है कि मतभेद हो भले ही मनभेद नहीं होने चाहिए। विचार भिन्नता को वे आदर्श मानते हैं और किसी एक विचार के प्रति नमनशील होकर समर्पित होने की ओर बढ़ना उनके अनुसार मुर्खता मानी जाती है। लेकिन प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या मतभेदों के रहते मनभेद नहीं होना संभव है। मनभेद का प्रारम्भ तो मतभेदों से ही होता है। यदि कोई मतभेदों के चलते मनभेद नहीं होने का दावा करता है तो क्या उसका वह दावा विश्वसनीय माना जा सकता है? पश्चिम जिस व्यवस्था की बात करता है उसमें वैचारिक मतभेद को मिटाने की बजाय सहअस्तित्व की बात करता है इसी का परिणाम है कि वहां इतनी अधिक मतभिन्नता पाई जाती है और जब कभी इस मतभिन्नता को मिटाने का प्रयास किया गया तब वहां निरंकुशता पनपी। पश्चिम का पूरा इतिहास या तो मतभिन्नता का इतिहास है या निरंकुशता का इतिहास है। जबकि भारत का इतिहास मतैक्य को आदर्श मानता है। लेकिन किसी निरंकुशता के सहारे नहीं बल्कि अपने मत के प्रति लोगों में आस्था पैदा कर आत्मिक स्वीकृति के द्वारा मतैक्य की बात भारत में की जाती है। इसलिए भारतीय व्यवस्था पश्चिम प्रदत्त लोकतांत्रिक व्यवस्था के समकक्ष नहीं है। पश्चिम प्रदत्त वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था तो मतभिन्नता की बारूद के ढेर पर पनपती है इसीलिए चरमराती भी है। पश्चिम में अनेक देशों में इस चरमराहट को महसूस किया जा सकता है और साथ ही लोकतंत्र के नाम पर लोकतंत्र के सहारे लोकतंत्र की हत्या कर पनपी निरंकुशता को भी पश्चिम में देखा जा सकता है। जरा विचार करें कि कल चुनावों के परिणाम आने तक जो लोग एक-दूसरे पर कीचड़ उछाल रहे होते हैं उनसे क्या अपेक्षा की जा सकती है कि वे एक के जीतने और दूसरे के हारने पर चुनावों के बाद देश के लिए साथ मिलकर काम कर पाएंगे? क्या उनके मतभेद मनभेद पैदा नहीं करते और यदि वे ऐसा दावा करते हैं तो क्या उनके इस दावे को मिथ्या दावा नहीं कहा जाएगा? क्या इस दावे के कारण किया जाने वाला उनका आपसी व्यवहार नाटक मात्र नहीं रह जाएगा? दुर्भाग्य से पश्चिम से प्रभावित भारतीयों द्वारा भारत में पनपाई व्यवस्था इसी अव्यवहारिकता के साथ चल रही है। आजादी के आंदोलन के दौरान एवं उसके बाद से ही मतभेदों को मिटाकर मतैक्य का कोई प्रयास नहीं किया गया। तात्कालीन कांग्रेस भिन्न-भिन्न मतों के लोगों का जमावड़ा मात्र था जो किसी एक साझा उद्देश्य के लिए साथ आए एवं उस उद्देश्य की प्राप्ति होते ही वह जमावाड़ा बिखर गया। यदि और गहराई में जाएं तो वह जमावाड़ा पहले ही बिखरा हुआ था। हम जानते हैं कि गांधी और सुभाष में मतभेद थे तो क्या वे मतभेद मनभेद के रूप में सामने नहीं आए। हम जानते हैं कि नेहरू और अंबेडकर में मतभेद थे तो क्या वे मतभेद कालांतर में मनभेद के रूप में प्रकट नहीं हुए? लेकिन जो लोग केवल सामान्य शिष्टाचार को ही मानते हैं उनकी नजर में शिष्टाचार वश एक दूसरे से मिलना-जुलना, सुख-दुःख में हाथ बंटाना या हालचाल जानना ही मतभेद न होना है और ऐसे ही सामान्य शिष्टाचार को एकत्व का मापदंड मान लिया जाता है। कालांतर में लोगों का व्यवहार बनावटी होता गया और आज सार्वजनिक जीवन में जो लोग एक-दूसरे को आमने-सामने के पाले में घोषित कर सामान्य जनता में धड़ेबंदी करवाते हैं वे शाम को साथ बैठकर शराब पीते हैं। उनके पीछे चलने वाले लोग अपने आपको ठगा हुआ महसूस करते हैं। वास्तव में तो मतभेद की आवश्यक परिणति मनभेद ही होता है इसका प्रचलित रूप आज की भारत की राजनीति में देखा जा रहा है। अपने मत को सिद्ध करने के लिए राष्ट्रीय हितों पर कुठाराघात किया जा रहा है। लगातार मतभेदों के कारण पनपे मनभेद के कारण ही राष्ट्र विरोधियों के साथ खड़े होने को भी गलत नहीं माना जा रहा है। इसलिए यह कहना कि मतभेद भले हो मनभेद नहीं होने चाहिए एक समझौते जैसा है जिसमें साथ चलने के लिए भिन्नताओं के साथ समझौता किया जाता है और समझौते टूट जाने के लिए ही होते हैं। इसलिए यदि मनभेदों को नहीं पनपने देना है तो मतभेदों के साथ समझौता नहीं बल्कि उन्हें मिटाना पड़ता है। वैचारिक एकता के बिना आगे की एकता दिवास्वप्न जैसा ही हैं इसलिए जो मतभेद के रहते मनभेद नहीं होने की बात करते हैं वे बहुत ऊपरी बात करती हैं, किनारे-किनारे घूमने की बात करते हैं। एकता और संगठन का प्रारंभिक सूत्र ही विचारों की एकता है। मतभेदों को मिटाना है। इसलिए वेद का सूत्र कहता है, 'हों विचार समान सबके, चित मन सब एक हों।' चित्त और मन के एक होने के लिए विचारों की समानता आवश्यक है। हां जिनका लक्ष्य चित्त और मन की एकता न होकर केवल ऊपरी टीप-टॉप ही है उनके लिए इन बातों का कोई मतलब नहीं होता। वे विचारों की भिन्नता को आदर्श मानते हैं और उनके साथ जीने का दावा करते हैं तथा साथ ही साथ या तो वैचारिक भिन्नता का नाटक करते हैं या फिर मनभेद न होने का नाटक करते हैं और नाटक तो आभासी दुनिया है। आभासी दुनिया से बाहर निकल कर वास्तविक मेल के लिए तो सब प्रकार के भेदों को मिटाना आवश्यक है चाहें वे मतभेद हों या मनभेद।

मार्गदर्शक पदचिह्न

आहत अहंकार और बलराम

ध्यकालीन इतिहास की बात करते हुए प्रायः हम बात करते हैं कि अहंकार, स्वार्थ आदि के कारण हमारा पतन हुआ। निश्चित रूप से ऐसा हुआ लेकिन उपर्युक्त दुर्गुण किसी काल विशेष में आबद्ध नहीं है। अहंकार हर काल में अपना प्रभाव दिखाता आया है और यह इतना गहराई से जमा हुआ शत्रु है कि इतिहास में श्रेष्ठ पुरुषों की श्रेणी में गिने जाने वाले लोग भी इसके आक्रमण से बच नहीं पाए और इससे आहत होकर जब आक्रमण किया तो उनकी श्रेष्ठता के भी आंच आ ही गई। महाभारत काल में ऐसे ही आहत अहंकार के अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं। उनमें से ही एक उदाहरण भगवान कृष्ण के बड़े भ्राता बलराम का है। सुभद्रा हरण के समय आहत हुआ उनका अहंकार दुर्योधन की मृत्यु तक अपने गुल खिलाता रहा। उनकी इच्छा के अनुसार सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से न होने एवं फिर अर्जुन द्वारा उसके हरण ने उनके मन में पाण्डवों के प्रति दुर्भावना पैदा की लेकिन भगवान कृष्ण के समर्थन के कारण वे कुछ नहीं कर पाए और महाभारत जैसे धर्मयुद्ध के समय तटस्थता का बहाना बनाकर वे तीर्थयात्रा पर निकल गए। जैसा कि माना जाता है कि वे शेषनाग के अवतार थे एवं धरती का भार उतारने के लिए भगवान कृष्ण के साथ अवतरित हुए थे लेकिन उनके आहत अहंकार ने धरती का भार हल्का करने के लिए हुए सबसे बड़े आयोजन से उन्हें दूर रहने को मजबूर किया। सदैव भगवान कृष्ण के साथ रहने वाले बलराम ने उनका ही साथ छोड़ दिया। बचपन से संघर्षों के बीच पनपे प्रेम का अतिरेक भी उनके आहत अहंकार को तुष्ट नहीं कर पाया और पाप-पुण्य के बीच निर्णायक घड़ी में उनका अहंकार जीत गया। लेकिन उस आहत अहंकार ने उन्हें तटस्थ भी नहीं रहने दिया और कौरव पक्ष की हार होने के बाद भीम और दुर्योधन के बीच हुए अंतिम निर्णायक युद्ध में वे निर्णायक होते हुए भी तटस्थ नहीं रह पाए और दुर्योधन की हार का बदला लेने गदा युद्ध के नियमों के बहाने भीम पर दौड़ पड़े। ऐसे में हमारे लिए यह विचारणीय होना चाहिए कि बलराम जैसे श्रेष्ठ पुरुष भी अपने आहत अहंकार के कारण भगवान कृष्ण जैसे भाई के सामने वाले पाले में जा सकते हैं तो हमारी तो बिसात ही क्या है? हमारा भी अहंकार पल-पल आहत होता रहता है और जब वह आहत होकर आक्रमण करता है तो सर्वप्रथम हमें ही जीतता है और हम हारकर उसके वशवर्ती हो अपने हेतु को भूल उसके अनुसार चलायमान होते हैं। ➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी

शब्दों की गरिमा और उनका प्रयोग

हमारी भारतीय संस्कृति में हर व्यक्ति को यथायोग्य संबोधन के लिए शब्दों का चयन किया जाता है। भारतीय भाषाओं की यह विशेषता है कि उसमें प्रत्येक परिस्थिति के लिए उपयुक्त शब्दों की व्यवस्था है और उनका यथायोग्य परिस्थिति में उपयोग समीचीन रहता है। जैसे हमारे यहां परम शब्द सर्वश्रेष्ठ के लिए उपयोग में लाया जाता है। परम एक प्रकार से अंग्रेजी की सुपरलेटिव डिग्री है जो सर्वोत्तम के लिए प्रयुक्त किया जाता है जैसे परम आदरणीय, परम सम्मानीय, परम श्रद्धेय आदि। शब्द की प्रकृति के अनुसार जो सर्वाधिक आदरणीय है या सम्मानीय है उसके आगे ही परम सम्मानीय या परम आदरणीय शब्द प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार किसी के प्रति अतिशय सम्मान प्रकट करना होता है तो उसके नाम के आगे 'श्रीश्री108' जैसा विशेषण जोड़ा जाता है। इसी प्रकार के कुछ अन्य शब्द भी हैं जो विशेष एवं सर्वश्रेष्ठ परिस्थितियों में द्योतक होते हैं। ये एक प्रकार से सम्मान सूचक उपाधियां होती हैं जो उपयुक्त व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती हैं। लेकिन कालांतर में चापलूसी, मिजाजपूर्सी के लिए इन शब्दों का उपयोग बहुतायत में होने लगा है जिससे इन शब्दों की गरिमा का हनन हुआ हैं। आजकल तो सम्मान के भूखे लोग स्वयं ही अपने नाम के आगे ये शब्द लगवाने लगे है। आजकल आप किसी समारोह में जाओ तो वक्ता लोग परम आदरणीय शब्द को तो सर्वाधिक प्रयोग में लाते हैं। आपस में एक-दूसरे को ही परम आदरणीय घोषित करते हैं और एक व्यक्ति के लिए अभी कुछ पल पहले कोई और परम आदरणीय होता है और कुछ ही पलों बाद कोई दूसरा परम श्रद्धेय हो जाता है। वास्तव में देखा जाए तो उनको स्वयं को ही भान नहीं होता कि वे जिस शब्द का उपयोग कर रहे हैं उसकी गरिमा क्या है? लेकिन यह तो जरूर हुआ है कि जो इस शब्द की गरिमा समझते हैं उनके लिए इसकी गरिमा का ह्रास अवश्य हुआ है। आजकल 'श्रीश्री-108' लगाना सामान्य बात हो गई है। किसी भी मठ या मंदिर की प्रतिष्ठा समारोह में छपे निमंत्रण पत्र पर आपको ये उपाधियां नजर आ जाएंगी। अंग्रेजों ने भारतीय राजाओं एवं अन्य लोगों को राजी करने के लिए इस प्रकार की उपाधियों के रेवड़ियां भरपूर बांटी और आज यदि किसी राजा का उनकी उपाधि सहित पूरा नाम लिखें तो कई पंक्तियां बन जाएंगी और याद करने के लिए पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता पड़ेगी। ➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	23.06.2017 से 26.06.2017	मोरना। जिला बिजनौर (उ.प्र.)
2.	प्रा.प्र.शि.	23.06.2017 से 26.06.2017	गादेरी। जोधपुर-नागौर हाईवे पर रातड़ी फांटा से बस, वाया-पालड़ी राणावतान गादेरी पहुंचे।
3.	प्रा.प्र.शि.	23.06.2017 से 26.06.2017	सर्वसिद्धि बालाजी मंदिर रायपुर (पाली), सोजत से अजमेर नेशनल हाईवे पर रायपुर से 1 किमी. पहले।
4.	प्रा.प्र.शि.	24.06.2017 से 26.06.2017	कूकड़। प्रांत मोरचंद (गुजरात)।
5.	प्रा.प्र.शि.	24.06.2017 से 26.06.2017	काणेटी। अहमदाबाद से साणंद वहां से काणेटी 2 किमी है।
6.	प्रा.प्र.शि.	01.07.2017 से 03.07.2017	धंधूका। राजपूत छात्रावास, एस.टी. बस स्टैण्ड धंधूका (गुजरात)।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

प्रांतीय बैठकों में बनी कार्य योजना

उच्च प्रशिक्षण शिविर में नवगठित प्रांतों की प्रांतीय बैठकें 10 व 11 जून को होने वाले कार्ययोजना शिविर से पूर्व करनी थीं। इसी क्रम में अनेक प्रांतों की बैठकें 27 व 28 मई को संपन्न हुईं जिनके समाचार विगत अंक में प्रकाशित किए जा चुके हैं। शेष प्रांतों की बैठकें उसके बाद आयोजित की गईं। 30 मई को नागौर प्रांत की प्रांतीय बैठक प्रांत प्रमुख उगमसिंह आशापुरा के आवास पर नागौर में रखी गई। स्नेहमिलन, शाखा शिविर, सम्पर्क यात्रा, संघ शक्ति पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता आदि के लिए वर्ष भर की कार्ययोजना बनाई गई। मेवाड़ वागड़ क्षेत्र के सभी प्रांतों की सामूहिक बैठक चित्तौड़गढ़ के विद्या निकेतन विद्यालय में वरिष्ठ स्वयंसेवक दुर्गासिंह रूद के सानिध्य में रखी गई जिसमें अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, वागड़, मालवा प्रांतों के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। वार्षिक कार्ययोजना में शाखा शिविर आदि कार्यक्रमों के साथ-साथ मेवाड़ में पूज्य तनसिंह जी की जयंती मनाने का भी निर्णय लिया। गुजरात के धोलेरा क्षेत्र के भाल प्रांत की बैठक धोलेरा में रखी गई जिसमें पूरे प्रांत को तीन मंडलों में बांटा गया। इस वर्ष प्रांत में दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर एवं एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर तय किए गए। शाखा, स्नेहमिलन, जयंतियां आदि कार्यक्रम तय किए गए। गुजरात के अहमदाबाद गांधीनगर प्रांत की बैठक 3 जून को रखी गई जिसमें प्रांत को दो मंडलों में विभक्त कर शाखाएं व शिविर तय किए गए। सभी स्वयंसेवकों को दायित्व दिया गया एवं वर्षभर के संभावित संघ कार्य को लेकर योजना बनाई गई। संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी व वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह हरदासकाबास सहित सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहे। पोकरण व फलोदी प्रांत की बैठक दयाल राजपूत छात्रावास पोकरण में संयुक्त रूप से रखी गई जिसमें पोकरण संभाग प्रमुख सांवलसिंह सनावड़ा के नेतृत्व में स्वयंसेवकों ने वर्ष भर की कार्ययोजना बनाई। फलोदी प्रांत के प्रांत प्रमुख गणपतसिंह अवाय व पोकरण प्रांत प्रमुख अमरसिंह ने मंडलों, शाखाओं, शिविरों आदि के प्रस्ताव तैयार किए। बीकानेर शहर प्रांत की बैठक नारायण निकेतन बीकानेर में रखी गई जिसमें शाखा, शिविर, जयंती, सम्पर्क यात्रा, विद्यार्थी वर्ग से सम्पर्क आदि की योजना बनाई गई।

जैसलमेर शहर प्रांत की बैठक प्रांतीय कार्यालय तनाश्रय में रखी गई जिसमें प्रांत प्रमुख नरेन्द्रसिंह तेजमालता व पूर्व प्रांत प्रमुख बाबूसिंह बेरसियाला के नेतृत्व में उपस्थित स्वयंसेवकों ने वर्ष भर की कार्ययोजना बनाई। चांधन प्रांत की बैठक मूलाना में रखी गई जिसमें संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा व प्रांत प्रमुख तारेन्द्रसिंह झिंझनियाली ने उपस्थित स्वयंसेवकों से चर्चा कर वर्षभर की कार्ययोजना बनाई। रामगढ़ प्रांत की बैठक रामगढ़ में व बैरसियाला झिंझनियाली प्रांत की बैठक झिंझनियाली में रखी गई। रामगढ़ में प्रांत प्रमुख पदमसिंह रामगढ़ ने साथियों से चर्चा कर कार्य योजना बनाई वहीं झिंझनियाली में संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा, प्रांत प्रमुख हरिसिंह बेरसियाला, वरिष्ठ स्वयंसेवक रेमतसिंह झिंझनियाली सहित सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहे। बाड़मेर संभाग के धोरीमन्ना प्रांत की बैठक बीजीए आश्रम बाड़मेर में रखी गई जिसमें संघ प्रमुख श्री का सानिध्य भी मिला। संभाग प्रमुख रामसिंह माडपुरा के निर्देशन में प्रांत प्रमुख गणपतसिंह बूठ ने साथी स्वयंसेवकों के सहयोग से कार्ययोजना बनाई। बाड़मेर के सिवाना प्रांत की प्रांतीय बैठक कल्लारायमलोत राजपूत छात्रावास सिवाना में प्रांत प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी के निर्देशन में हुई जिसमें वर्षभर की कार्य योजना बनाई गई। कोलायत नोखा प्रांत की बैठक दो भागों में रखी गई। नोखा क्षेत्र के स्वयंसेवकों ने नोखा में व कोलायत क्षेत्र के स्वयंसेवकों ने गोकुल में बैठक की। प्रांत प्रमुख करणीसिंह दोनों में उपस्थित रहे एवं वर्ष भर की कार्य योजना तैयार की। कोलायत में संभाग प्रमुख गुलाबसिंह आशापुरा भी उपस्थित रहे। गुजरात के महेसाणा प्रांत की बैठक भी 4 जून को रखी गई जिसमें सभी स्वयंसेवकों को उत्तरदायित्व सौंपे गए। ओसियां प्रांत की बैठक शक्ति वाटिका ओसियां में केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा एवं संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास के निर्देशन में हुई जिसमें प्रांत प्रमुख प्रेमसिंह पांचला ने सभी से चर्चा कर वर्ष भर की योजना बनाई। गुजरात के भावनगर शहर प्रांत की बैठक में वहां के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। संभाग प्रमुख धर्मेन्द्रसिंह आंमली व शाखा कार्यालय (गुजरात) प्रमुख छन्नुभा पच्छेगांव भी उपस्थित रहे। जयपुर संभाग के जयपुर शहर, जयपुर ग्रामीण (उत्तरपूर्व), जयपुर ग्रामीण (दक्षिण पश्चिम) व दौसा करोली प्रांत की बैठक संयुक्त रूप से संघशक्ति भवन जयपुर में रखी गई। बैठक में संभाग प्रमुख राजेन्द्रसिंह बोबासर के निर्देशन में प्रत्येक प्रांत ने अपने-अपने प्रांत प्रमुख के साथ बैठकर कार्ययोजना बनाई। बैठक में वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह सरवड़ी, दीपसिंह बैण्यांकाबास, संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास व केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ का सानिध्य मिला। बैठक में उत्तरप्रदेश के मौरना में होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर को लेकर भी चर्चा की गई। मुंबई प्रांत की बैठक प्रांत प्रमुख नीरसिंह सिंघाणा के निर्देशन में रखी गई जिसमें पूरे प्रांत को तीन मंडलों में विभक्त कर कार्य योजना बनाई गई। जोधपुर शहर प्रांत की बैठक प्रांतीय कार्यालय तनायन में केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा व संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास के निर्देशन में रखी गई जिसमें प्रांत प्रमुख उम्मेदसिंह सेतरावा ने वर्षभर की कार्ययोजना पर चर्चा की। जालोर शहर प्रांत की बैठक जालोर में संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी एवं प्रांत प्रमुख गणपतसिंह भंवराणी के निर्देशन में हुई वहीं गोडवाड़ प्रांत की बैठक प्रांत प्रमुख हीरसिंह लोड़ता के आवास पर रखी गई जिसमें स्थानीय स्वयंसेवक व सहयोगी शामिल हुए। पाली प्रांत के सोजत, जोजावर, पाली आदि मंडलों की भी बैठकें इस दौरान संपन्न हुईं जिनमें प्रांत प्रमुख महोब्बतसिंह धींगाणा ने मंडल प्रमुखों एवं सहयोगियों से चर्चा कर प्रांतीय बैठक में तय किए गए कार्यक्रम पर चर्चा की। बाड़मेर प्रांत के बायतु प्रांत की बैठक 7 जून को रखी गई जिसमें संभाग प्रमुख रामसिंह माडपुरा के निर्देशन में प्रांत प्रमुख मूलसिंह चांदेसरा ने कार्ययोजना बनाई वहीं 8 जून को शिव प्रांत की बैठक रखी गई जिसमें प्रांत प्रमुख राजेन्द्रसिंह भिंयाड़ द्वितीय ने साथी स्वयंसेवकों से चर्चा कर संभाग प्रमुख जी के निर्देशन में कार्ययोजना बनाई। नागौर संभाग के कुचामन प्रांत की बैठक आयुवान निकेतन कुचामन में रखी गई जिसमें प्रांत प्रमुख नत्थुसिंह छापड़ा ने वरिष्ठ स्वयंसेवकों के निर्देशन में कार्ययोजना बनाई। सांचौर रानीवाड़ा प्रांत की बैठक सुरावा गांव में रखी गई जिसमें वर्षभर की कार्ययोजना बनी।

बालोतरा प्रांत में सम्पर्क यात्रा

बालोतरा प्रांत के कल्याणपुर मंडल में प्रांत प्रमुख राणसिंह टापरा के नेतृत्व में मंडल प्रमुख वीरमसिंह थोब, बलवंतसिंह कोटड़ी, दौलतसिंह मूंगेरिया आदि के दल ने रेवाड़ा, तिरसिंगड़ी चौहान, नेवरी, कल्याणपुर, अराबा उड़ा, अराबा चौहान आदि गांवों में सम्पर्क कर थोब में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर तय किया। रेवाड़ा गांव में चल रही शाखा के स्वयंसेवकों से मिले। अराबा उड़ा के वयोवृद्ध स्वयंसेवक सवाईसिंह अराबा से मिलने पर उन्होंने पुरानी स्मृतियां ताजा की एवं वर्तमान की गतिविधियां के बारे में जानकारी ली।

हार्दिक बधाई

मानवेन्द्रसिंह

पुत्र श्री शिवदानसिंह (पीईटी) सोनू (जैसलमेर) के राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड 12वीं की परीक्षा में विज्ञान वर्ग में **85.60** प्रतिशत अंक हासिल करने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु : बाबूसिंह पुत्र श्री शिवदानसिंह सोनू हाल सूरत (गुजरात) 8758416069

हार्दिक बधाई

रेणु कंवर

पुत्री जसवंतसिंह निवासी फलसूण्ड को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा में **94.37** प्रतिशत अंक हासिल करने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु : हनुवंतसिंह आशापुरा, बीकानेर

IAS/ RAS

तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान

स्प्रिंग बोर्ड

Spring Board

कृष्णा नगर-I, लालकोठी स्कीम, जयपुर

मो. 9636977490, 0141- 4015747

website : www.springboardindia.org

हार्दिक बधाई

अंकेश कंवर

सुपुत्री श्री गणपतसिंह भाटी

गांव घड़सी का बाड़ा तहसील पचपदरा जिला बाड़मेर ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर की 12वीं कक्षा में कला वर्ग से **89.60 प्रतिशत** अंक हासिल किए हैं। छात्रा को **हार्दिक बधाई** एवं **उज्ज्वल भविष्य** की **शुभकामनाएं।**

शुभेच्छु

प्रेमसिंह रेवाड़ा
9726546735
पी. राठौड़ एण्ड कंपनी
सूरत

खुमाणसिंह मिठौड़ा
9726566862
के. राठौड़ एण्ड कम्पनी
सूरत

प्रतिभाएं

दिव्या राठौड़

हरनावां पट्टी के मूल निवासी एवं वर्तमान में जयपुर निवासरत भरतसिंह राठौड़ की पुत्री दिव्या राठौड़ ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सीनियर सैकण्डरी परीक्षा 2017 में विज्ञान वर्ग में 89.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा के पिता ट्रेवल एजेन्ट का काम करते हैं।

माया भागरोत

चित्तौड़गढ़ के डूंगला क्षेत्र के सुरेड़ा गांव की माया भागरोत ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 96.40 प्रतिशत अंक हासिल कर कानोड़ में रहकर अध्ययन करते हुए उदयपुर जिले में प्रथम स्थान पाया है।

दीपाली कंवर

नागौर की रियां बड़ी तहसील के जसनगर (केकिन्द) गांव की दीपाली कंवर ने 12वीं विज्ञान वर्ग में आरबीएसई से 93 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा के 10वीं में भी 90.50 प्रतिशत अंक आए थे व गार्गी पुरस्कार मिला था। छात्रा के पिता नरेन्द्रसिंह राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण में इतिहासकार एवं राव दूदागढ़ (मीरा स्मारक) संग्रहालय के प्रबंधक हैं।

दरियाव कंवर

नाडसर जोधपुर के निवासी किशोरसिंह की पुत्री दरियाव कंवर ने आरबीएसई द्वारा आयोजित 12वीं परीक्षा में 81.20 प्रतिशत अंक कला वर्ग में हासिल किए हैं। छात्रा के पिता गांव में खेती करते हैं।

चित्रांगदा कंवर

जोधपुर के लोड़ता निवासी हुकमसिंह की पुत्री चित्रांगदा कंवर ने सीबीएसई दसवीं परीक्षा में 10 सीजीपीए हासिल किए हैं। छात्रा परिवार सहित बीकानेर में रहती है।

जयंतसिंह

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक दीपसिंह बैण्यांकाबास के पौत्र व लक्ष्मण बैण्यांकाबास के पुत्र जयंतसिंह ने सीबीएसई दसवीं में 9.4 सीजीपीए हासिल किए हैं। जयंत का पूरा परिवार संघ से जुड़ा है।

हर्षवर्धनसिंह

जालोर जिले के जाखड़ी निवासी संघ के स्वयंसेवक नाहरसिंह जाखड़ी के पुत्र हर्षवर्धन सिंह जाखड़ी ने सीबीएसई की दसवीं परीक्षा में 9.4 सीजीपीए हासिल किए हैं। छात्र का परिवार वर्तमान में जालोर में निवासरत है व संघ से जुड़ा है।

अंकेश कंवर

घड़सी का बाड़ा जिला बाड़मेर निवासी गणपतसिंह भाटी की पुत्री अंकेश कंवर ने आरबीएसई की 12वीं परीक्षा में कला वर्ग में 89.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मानवेन्द्रसिंह

ग्राम सोनू जिला जैसलमेर निवासी शिवदानसिंह के पुत्र मानवेन्द्रसिंह ने आरबीएसई 12वीं परीक्षा में विज्ञान वर्ग में 85.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

शिवानी कंवर व नीरज कंवर

संघ के दिवगंत स्वयंसेवक मेघसिंह जी जुलियासर की पौत्री एवं राजेन्द्र सिंह की पुत्री शिवानी कंवर आरबीएसई 12वीं कलावर्ग में 81.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। इसकी ही बहिन नीरज कंवर ने इसी परीक्षा में 76.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दिव्या कंवर

ग्राम टडियाल जिला चुरु के मूल निवासी एवं वर्तमान में निवारू रोड झोटवाड़ा जयपुर निवासी विक्रमसिंह की पुत्री दिव्या कंवर ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 86.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा को 10वीं में भी 90.50 प्रतिशत अंक मिले थे।

अभिषेक सिंह राठौड़

नागौर जिले के रसीदपुरा के मूल निवासी एवं वर्तमान में खातीपुरा जयपुर में रह रहे नरेन्द्रसिंह के पुत्र अभिषेक सिंह ने सीबीएसई 12वीं विज्ञान वर्ग में 94.2 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र जयपुर के केन्द्रीय विद्यालय नं. चार का विद्यार्थी है।

दिव्याकृति कंवर

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक कर्नल हिम्मतसिंह पीह की पौत्री एवं विक्रमसिंह की पुत्री दिव्याकृति कंवर ने 12वीं की परीक्षा में 91 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा एक दक्ष घुड़सवार भी है।

सत्यवर्धनसिंह भंवरानी

जालोर जिले के भंवराणी गांव निवासी गणपतसिंह भंवराणी के पुत्र सत्यवर्धन सिंह भंवराणी ने आरबीएसई द्वारा आयोजित 10वीं की परीक्षा में 87.50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र का पूरा परिवार संघ से जुड़ा है।

रेणु कंवर जोधा

जैसलमेर के फलसुण्ड निवासी जसवंतसिंह जोधा की पुत्री रेणु कंवर जोधा ने आरबीएसई द्वारा आयोजित 10वीं की परीक्षा में 94.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा बाड़मेर में अध्ययनरत थी।

वीरमसिंह

जैसलमेर के मूलाना निवासी चंदनसिंह के पुत्र वीरमसिंह ने आरबीएसई द्वारा आयोजित 10वीं की परीक्षा में 91.67 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र बाड़मेर में रहकर अध्ययनरत था।

तारेन्द्रसिंह

संघ के स्वयंसेवक रायमलसिंह कोटड़ा के पुत्र तारेन्द्रसिंह ने आरबीएसई 10वीं की परीक्षा में 96.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने गणित व विज्ञान में 100 में से 100 अंक हासिल किए हैं।

हृषीकेश सिंह पाटोदा

सीकर जिले पाटोदा ग्राम निवासी हनुमानसिंह के पौत्र हृषीकेश सिंह पाटोदा ने सीबीएसई की 10वीं परीक्षा में 10 सीजीपीए हासिल किए हैं। हृषीकेश का पूरा परिवार संघ से जुड़ा हुआ है।

सत्येन्द्रसिंह लाखलान बने उपाध्यक्ष : प्रताप युवा शक्ति के प्रदेश महासचिव सत्येन्द्रसिंह लाखलान फैमिली कोर्ट बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। सत्येन्द्रसिंह संघ के स्वयंसेवक हैं।

गेम चैन्जर अवार्ड 2017

हिन्दुस्तान टाइम्स समूह ने केन्द्रीय सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ को गेम चेन्जर अवार्ड 2017 से सम्मानित किया है। विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट साहसपूर्ण एवं अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों को इस अवार्ड से सम्मानित किया जाता है।

MEERA GIRLS SCHOOL, SIKAR

Fully Girls Residential English Medium Educational Institute

Admission Open Class Nursery to X[th]

Salient Features

* Spacious Campus of 10 acres with lush Green & Peaceful atmosphere.
* Dynamic & Dedicated Staff.
* Hostel Facilities.
* Very reasonable fee structure.
* Unique Teaching Methodology.
* Horse Ridding, Shooting, Swimming, Marshal Art.
* Advanced Co- curricular activities.

(A Unit of Durga Mahila Vikas Sansthan, Sikar)
Dhod Road, Bikaner by pass, Nathawatpura, Sikar (Raj.)
Ph. 01572-296512,
Mob. 9929048222, 9414052041, 9414243169, 9414211465

(पृष्ठ एक का शेष)

क्षत्रियों की...

इसे लेकर धर्म के नाम पर फैली विकृतियों एवं भ्रमों का निवारण करो, भारत की जनता को फिर सिर उठाकर जीने का संबल प्रदान करो। विश्व की आबादी को सिर उठाकर जीने का संबल प्रदान करो एवं भारत को फिर से विश्व गुरु की प्रतिष्ठा प्रदान करो। स्वामी जी अपने दो दिवसीय जयपुर प्रवास के दौरान रात को अपने शिष्यों सहित संघशक्ति में ही रुके। 31 मई को प्रातः भी उपस्थित स्वयंसेवकों एवं श्रद्धालुओं से धर्म चर्चा कर यथार्थ बोध करवाया। माननीय संघ प्रमुख श्री दो दिन तक स्वामीजी के साथ रहे।

'इदं मम...'

कार्य का विस्तार हो, पूज्य तनसिंह जी का संदेश हर घर तक पहुंच सके इसलिए इस बार प्रांतों की संख्या बढ़ाकर अधिक लोगों को जिम्मेदारी दी गई है ताकि हर व्यक्ति को कोई न कोई काम मिले व वह संघ कार्य में अपनी भागीदारी निभा सके। किसी भी काम को छोटा नहीं समझें और पूरे वर्ष ईश्वरीय कृपा की प्रार्थना के साथ दिए गए उत्तरदायित्व का निर्वहन करें। हर व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है और वह अपनी महत्ता को समझे। उन्होंने कहा कि काम कम हो तो किसी प्रकार की निराशा न पनपने दें बल्कि हमारा प्रयास यथाशक्ति पूर्ण किया गया हो इस बात का ध्यान रखें। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि मन, बुद्धि या इससे आगे की सत्ताएं हमारे समझ में यदि नहीं आती हैं तो शरीर जो स्थूल है जिसे हम देख सकते हैं उसे साधने का प्रयास करें, उसका अभ्यास करें, उत्तरोत्तर प्रगति होती जाएगी। उन्होंने पूज्य तनसिंह जी रचित एक गीत का उल्लेख करते हुए कहा कि त्यागमय जीवन जीकर संसार को जीने का अवसर प्रदान करने के रास्ते हमारे रहे हैं और इसे हम ही जानते हैं बस आवश्यकता है हमारे में सुप्त अपनेपन को जागृत करें। 10 व 11 जून को संपन्न इस शिविर में लगभग 125 दायित्वाधीन स्वयंसेवकों ने भाग लेकर वर्षभर की कार्ययोजना बनाई। विभिन्न प्रान्तों से आए प्रस्तावों पर संभाग प्रमुखों एवं केन्द्रीय कार्यकारियों के साथ बैठकर विचार-विमर्श किया एवं समेकित योजना बनाई। सभी की प्रगति रिपोर्ट भेजने की प्रक्रिया समझाई गई। विभिन्न विभाग प्रमुखों ने अपने-अपने विभागों की कार्ययोजना साझा की। वर्षभर के शिविर तय किए गए, शिविर संचालक तय किए गए। संभावित शाखाओं की सूची बनाई गई। शिविरों एवं शाखाओं के शिक्षण से संबंधित निर्देश दिए गए। शिविर का संचालन माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देशानुसार संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास ने किया। इस वर्ष पूरे संघ को 16 संभागों एवं 63 प्रांतों में विभक्त किया गया है। प्रांत प्रमुख के सहयोग के लिए सह प्रांत प्रमुखों सहित मण्डल प्रमुखों एवं विभिन्न विभाग प्रभारियों की टीम बनाई गई है।

सम्राट पृथ्वीराज जयंती मनाई

संघ के मुंबई प्रांत की तनेराज शाखा में गिरगांव चौपाटी पर 4 जून को सम्राट पृथ्वीराज जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। उपस्थित स्वयंसेवकों द्वारा पुष्पांजलि के पश्चात् पृथ्वीराज चौहान के व्यक्तित्व पर चर्चा करते हुए बताया गया कि वे सभी कलाओं में प्रवीण थे। उन्होंने मात्र 14 वर्ष की उम्र में दो युद्धों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया था। उन्होंने काबुल तक के क्षेत्र को जीता लेकिन किसी के सम्मान एवं धर्माचरण को ठेस नहीं पहुंचाई। काबुल से आए मीर हुसैन को शरण दी। अनेक युद्धों में गौरी को हराया एवं अंतिम युद्ध में भी वीरतापूर्वक लड़े। चर्चा के दौरान मुंबई प्रांत में संघ कार्य के विस्तार को लेकर चर्चा की गई।

मांगलियावास में चांदाजी जयंती

नागौर जिले में गोटन के निकट स्थित मांगलियावास में राव चांदाजी की

जयंती मनाई गई जिसमें सांसद हरिओमसिंह, बीज निगम के अध्यक्ष शंभुसिंह खेतासर, जयपुर शहर कांग्रेस अध्यक्ष प्रतापसिंह खाचारियावास, करणसिंह उचियारड़ा, राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा, मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा आदि ने अतिथि के रूप में शिरकत की। वक्ताओं ने समाज के इतिहास पुरुषों से प्रेरणा लेकर तद्नुकूल आचरण करने पर बल दिया। सभी को साथ लेकर ईश्वरीय भाव की सृष्टि का आह्वान किया।

महाराणा प्रताप जयंती

श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में राज राजेश्वरी सोसायटी सुरेन्द्रनगर के बापा सीताराम स्थल पर महाराणा प्रताप की जयंती का कार्यक्रम आयोजित हुआ। भुरुभा मोढवाणा द्वारा संघ की प्रार्थना के पश्चात् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक मनहरसिंह झिंझुवाड़ा ने महाराणा प्रताप के प्रेरक प्रसंग बताते हुए कहा कि आज के व्यस्तता के युग में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करना और उनमें उपस्थित होना सराहनीय है। श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा कुटुम्ब, समाज और राष्ट्र के हित में संस्कार सिंचन करना प्रशंसनीय और सराहनीय है। बलराजसिंह भलगामड़ा ने राजराजेश्वरी सोसायटी की शाखा के अलावा प्रदेश में जहां-जहां क्षत्रिय युवक संघ द्वारा महाराणा प्रताप की जयंती मनाई जा रही है, वह विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए राजेन्द्रसिंह घणाद ने क्षत्रिय युवक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली समझाई। उन्होंने महाराणा प्रताप से प्रेरणा लेकर नई पीढ़ी का संघ से जुड़ने का आह्वान किया। भुरुभा ने नई पीढ़ी में उत्तम संस्कार आएं, इसके लिए माता-पिता की सजगता बनी रहने पर जोर दिया। हमारी उज्ज्वल परम्पराओं का पालन होता रहे, यह पुरानी पीढ़ी का दायित्व बनता है। कविराज प्रतापदान ने महाराणा प्रताप के शौर्य और गौरव को अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा पद्य में प्रस्तुत किया।

(पृष्ठ चार का शेष)

आहत अहंकार...

जीवन में सावधानीपूर्वक हमारे व्यवहार का अवलोकन करें तो पाएंगे कि हमारे जीवन व्यवहार की अनेक क्रिया-प्रतिक्रिया इस आहत अहंकार के कारण होती है और यही क्रिया-प्रतिक्रिया हमें हमारे जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ने से रोकती है। रोकती ही नहीं है बल्कि अनेक बार सामने वाले पाले में खड़ा होने को मजबूर करती है। इस मजबूरी को मजबूरी न मानकर यदि हम हमारे अस्तित्व को साथ लगाकर स्वीकृति देते हैं तो हमें पथभ्रष्ट होने से कोई नहीं रोक सकता। लेकिन यदि हम यह स्वीकार भी कर लें कि यह सब क्रिया प्रतिक्रिया मेरे आहत अहंकार का प्रत्याक्रमण है और मैं अपनी कमजोरी वश उसके साथ खड़े होने को मजबूर हूं तो संभावना यह भी बनती है कि कालांतर में हमारा यह आत्मावलोकन एवं ग्लानि उस आहत अहंकार का साथ छोड़ने की शक्ति हमें प्रदान कर दे और उस दिन हमारा अस्तित्व उस अहंकार पर भारी पड़ जाए। यह सब एक प्रक्रिया है और उसी प्रक्रिया से गुजर कर कदम दर कदम हम आगे बढ़ते जाते हैं। पूज्य तनसिंह जी हमें ऐसी ही प्रक्रिया प्रदान कर गए हैं जो आत्मवलोकन जगाती है, आत्मग्लानि को प्रस्फुटित करती है और उसी आत्मग्लानि का अतिरेक होने पर हमारे में भागवत शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है।

शब्दों की...

अभी कल-परसों किसी संस्था के संस्थापक के लिए फेसबुक पर एक उपाधि पढ़ने को मिली 'शीर्ष संस्थापक'। अब शायद उन्हें संस्थापक शब्द थोड़ा छोटा मालूम पड़ता होगा इसीलिए उसके आगे शीर्ष विशेषण जोड़ा गया लेकिन वास्तव में क्या संस्थापक भी अनेक होते हैं? कोई संस्थापक सदस्य हो सकता है लेकिन स्थापना करने वाला तो एक ही होता है। लेकिन यहां भी वही सुपरलेटिव आभास कराने के लिए शीर्ष विश्लेषण जोड़ा गया है। ऐसा अनेक जगह होता है। सुस्वागतम लिखना प्रायः सामान्य बात हो गई है लेकिन जब स्वागत का मतलब ही सुआगत होता है तो फिर दो बार 'सु' उपसर्ग लगाने का क्या अर्थ। प्रायः इसी प्रकार अनेक शब्दों को हम हमारे अहंकार को या सामने वाले के अहंकार को तुष्ट कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उपयोग कर शब्दों की गरिमा का हनन करते हैं। अनेक लोग तो अनजाने में ही दूसरों की देखा-देखी ऐसा करने लगते हैं और हंसी का पात्र भी बनते हैं। लेकिन जब जमाना ही येन-केन प्रकारेण अपना स्वार्थ साधने को होशियारी मानता है तो बहुरूपिया बनना भी ऐसे लोगों को नागवार नहीं लगता।

भंवरसिंह जाखली नहीं रहे

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **भंवरसिंह जाखली** का विगत 11 मई को देहावसान हो गया। वे 83 वर्ष के थे। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देने हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

गंगासिंह तेजमालता को भातृ शोक

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह तेजमालता के बड़े भ्राता **लखसिंह तेजमालता** का विगत 17 मई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देने हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

लखसिंह तेजमालता

सुगनसिंह पायली का देहावसान

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **सुगनसिंह जी पायली** का स्वर्गवास 13 मई को हो गया। रतनगढ़ तहसील के पायली ग्रामवासी सुगनसिंह जी संघ प्रति सदैव निष्ठावान रहे। आप गांव में ही कृषि कार्य में व्यस्त रहते थे पर हर सामाजिक कार्य के लिए सदैव तत्पर रहते थे। संघ के अनेक प्रशिक्षण शिविरों में आपने प्रशिक्षण लिया था। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देने हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

शक्ति का उपार्जन चलता रहे : भादला

विदा शब्द वेदना उत्पन्न करता है लेकिन उत्पति, स्थिति और लय सृष्टि का नियम है। आज से सात दिन पूर्व 25 मई को इस शिविर का प्रारम्भ हुआ, आप सबने अपने आपको एक व्यवस्था में बांधा और आज उसी सृजन का पटाक्षेप है, लय है। लेकिन इन सात दिनों में आप सबने अपनी अनेकता को भी लय होते देखा है। अनेकता के बावजूद आपने महसूस किया कि आप एक हैं, एक ही शृंखला की कड़ियां हैं। चित्तौड़गढ़ के विद्या निकेतन स्कूल में आयोजित बालिका शिविर के विदाई कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शिविर प्रमुख जोरावरसिंह भादला ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि इन सात दिनों में आपने शक्ति के उपार्जन हेतु उपासना की है। शक्ति का यह उपार्जन अनवरत चलता रहना चाहिए। यहां से जाने के बाद भी जारी रहना चाहिए। संघ ने आप पर भरोसा कर अपनी व्यथा आपको सौंपी है, उस भरोसे पर खरा उतरते हुए हमें इस व्यथा का प्रसार करना है। बाहर का वातावरण विपरीत है लेकिन यहां जो शक्ति और संकल्प आपमें जागा है उसके बल पर आगे बढ़ती रहें। 25 से 31 मई तक चले इस शिविर में लगभग 340 युवतियों व महिलाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर के अधिकांश कार्यक्रमों का संचालन महिलाओं ने ही किया। शिविर व्यवस्था का जिम्मा वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह साजियाली के नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ की टीम ने संभाला। सात दिवसीय शिविर में दो दिन संघ प्रमुख श्री का भी सानिध्य मिला एवं एक दिन स्थानीय सहयोगियों का स्नेहमिलन भी रखा गया।

श्री सद्गुरु भगवान छात्रावास एवं कोचिंग सेंटर

एसबीआई बैंक के सामने, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी, नागौर (राज.)

- कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों के आवास की सुंदर व्यवस्था
- अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या
- पौष्टिक एवं सात्विक आहार
- कक्षा 6 से 12 तक कोचिंग सुविधा
- वरिष्ठ जनों का मार्गदर्शन

संपर्क सूत्र: नत्थुसिंह छापड़ा 7073305111, 9772097087

कक्षा प्रथम से बारहवीं तक पढ़ने, खेलने व रहने की समुचित सुविधा युक्त व बालकों के सर्वांगीण विकास का उत्तम केन्द्र

श्री बालाजी सी.सै. स्कूल सोमेसर, जोधपुर

श्री बी.एस. बाल निकेतन (अंग्रेजी माध्यम LKG से 5th)

20 जून से प्रवेश चालू

(हॉस्टल सुविधा व RS-CIT कम्प्यूटर प्रशिक्षण उपलब्ध)

सम्पर्क सूत्र : 9982640455, 9828576552

रोजगार का सुनहरा अवसर

समुन्द्र किनारे वादियों के बीच बसे रमणीक नगर मैंगलोर (कर्नाटक) में होलसेल गोदाम पर कार्य करने के लिए ऊर्जावान, मेहनती व ईमानदार युवाओं की आवश्यकता है।

योग्यता : 10वीं पास, आयु : 20 वर्ष से अधिक
वेतन : 10000 से 15000 (योग्यतानुसार)
वर्ष में दो माह छुट्टियां एवं रहना-खाना फ्री

तुरन्त सम्पर्क करें : 919742011431, 919828381431

अनुत्तीर्ण विद्यार्थी निराश न हों

केवल अनुत्तीर्ण विषयों की परीक्षा देकर साल बचाएं।
परीक्षा सितम्बर में, परिणाम नवम्बर में

10वीं/12वीं पास करें

NIOS बोर्ड का अधिकृत स्टडी सेन्टर, कोड नं. 170347

आदर्श सी.सै. स्कूल

सोलंकियातला, शेरगढ़, जोधपुर, फोन : 9783202923

शहीदे आजम सरदार भगतसिंह

उच्च माध्यमिक विद्यालय, तिंवरी

सत्र 2016-17 कक्षा बारहवीं (विज्ञान वर्ग)

कक्षा बारहवीं (कला वर्ग)

कक्षा दसवीं

गार्गी पुरस्कार की हकदार बहिनें 34

समग्र परीक्षा परिणाम 2016-17

कक्षा	90% व अधिक	85% व अधिक	80% व अधिक	75% व अधिक	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी
12वीं विज्ञान वर्ग	05	14	29	47	98	07	कोई नहीं
12वीं कला वर्ग	00	04	15	24	80	16	कोई नहीं
दसवीं	06	16	30	43	86	25	कोई नहीं

प्रधानाचार्य श्री आईदानसिंह भालुँगा M.:9783789133
छात्रावास अधीक्षक/ उपप्रधानाचार्य: श्री मोहनराम गोदारा (पड़ासला) M.: 9024435681
प्रधानाध्यापक श्री शिवराज सैन M.: 7727010421
व्यवस्थापक श्री नृसिंह भार्गव M.: 97998-47607
प्रबंध निदेशक श्री ताराचन्द लक्कार M.: 9782619037

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org